आइडिया के नेटवर्क से उपभोक्ता हलकान

हल्द्वानी : बेहतर सेवाएं एवं सबसे बड़ी निजी संचार कंपनी का दावा करने वाली आयडिया के उपभोक्ता पस्त हैं। मोबाइल वाइस टॉकिंग के साथ इंटरनेट सेवाएं भी तीन दिन से चरमराई हुई हैं। संचार कंपनी का 'आयडिया' परेशानी का सबब बना हुआ है। आयडिया कंपनी से जुड़े प्रीपेड व पोस्टपेड उपभोक्ता तीन दिन से खराब सेवाओं के चलते परेशान हैं। सिग्नल गायब रहना, बातचीत बीच में ही कटना एवं डायल करते ही कॉल खत्म का ऑप्सन दिखा रहे मोबाइल उपभोक्ताओं के लिए खिलौना बन गए हैं। यही नहीं डाटा कार्ड एवं इंटरनेट का प्रयोग कर रहे उपभोक्ताओं के लिए तो यह सेवा परेशान करने वाली साबित हुई है। इधर, कंपनी के अधिकारियों का तर्क है कि रविवार रात्रि एवं सोमवार रात्रि रुद्रपुर के आसपास ऑप्टिकल फाइबर केबिल कटने से दिक्कत रही। ऐसे में उपभोक्ताओं का आयडिया से मोहभंग हो रहा है।

योजना : हवाई द्वीप में स्थापित की जाएगी दुनिया की सबसे बड़ी दूरबीन

ब्रह्मांड में छिपे रहस्य खोलेगी टीएमटी

- उपकरणों के निर्माण में एरीज भी निभाएगा महत्वपूर्ण भूमिका

रमेश चन्द्रा, नैनीताल

अभी तक कई सवालों के घिरे ब्रह्मांड के रहस्यों से पर्दा उठाने के लिए थर्टी मीटर टेलीस्कोप (टीएमटी) दुनिया की सबसे बढ़ी दूरबीन होगी। 30 मीटर व्यास वाली दूरबीन के निर्माण में आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) नैनीताल भी शामिल होगा। दूरबीन का निर्माण कार्य अगले वर्ष से शुरू हो जाएगा। ब्रह्मांड की थाह पाने के लिए कई सदियों से प्रयास किए जा रहे हैं। विज्ञान की इस मुहिम में कई सफलताएं भी हाथ लगी हैं, लेकिन आज भी कितने ही ऐसे सवाल हैं जिनका हल अभी तक नहीं मिल पाया है।

ब्लैक होल का गुरुत्वाकर्षण, भार, डार्क मैटर व ब्रह्मांड के विस्तार समेत कई ऐसी गुत्थियां हैं, जिनके बारे में जाने बिना ब्रह्मांड को ठीक से समझा नहीं जा सकता। इन सब रहस्यों को जानने के लिए दुनिया के पांच देश एक साथ मिलकर 30 मीटर व्यास की

प्रस्तावित टीएमटी दूरबीन का माडल।

दूरबीन बनाने जा रहे हैं। भारत समेत अमेरिका, चीन, जापान व कनाडा इस मेगा प्रोजेक्ट में शामिल है। दूरबीन को लेकर कवायद वर्ष 2007 से शुरू हो गई थी। छह साल के अंतराल के बाद यह योजना मूर्त रूप लेने जा रही है। योजना में भारत 10 फीसद भागीदारी निभा रहा है। आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान एरीज दूरबीन के उपकरणों के निर्माण में भागीदारी करेगा।

एरीज के खगोल वैज्ञानिक डा. शशि भूषण पांडे के अनुसार दूरबीन बनाने में नौ साल लगेंगे। इस प्रोजेक्ट के उपकरणों के निर्माण में देश के कई उद्योगों का सहयोग लिया जाएगा। साथ ही देश भर के कई इंस्टीट्यूट महत्वपूर्ण भागीदारी निभाएंगे। इस योजना से भारत को काफी अनुभव प्राप्त होगा, जो बढ़ी दूरबीनों के निर्माण में मददगार साबित होगा। यह दूरबीन ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज करने में मील का पत्थर साबित होगी। वैज्ञानिकों को शोध के लिए इस तरह की क्षमतावान दूरबीन की सख्त जरूरत है, जिस कारण दुनिया के पांच देश इसे संयुक्त रूप से बनाने के लिए शामिल हुए है। दूरबीन हवाई द्वीप में स्थापित की जाएगी। वातावरण की दृष्टि से हवाई द्वीप उपयुक्त स्थान है।

जागरण